

विचार बिन्दु

कहानी जहाँ खत्म होती है, जीवन वहीं से शुरू होता है। – संजीव

फ़ेसबुक का लाइक बटन क्या गुल खिलाता है!

आभासी डिजिटल पटल पर 2०09 में जब ‘फ़ेसबुक’ ने लाइक बटन प्रस्तुत किया, तब से यह बटन सोशल मीडिया की भाषा का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह बटन एक क्लिक के ज़रिए उपयोगकर्ताओं को किसी पोस्ट, फोटो, वीडियो या टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया देने का आसान माध्यम देता है। लाइक बटन ने उपयोगकर्ताओं को शब्दों के बिना अपनी सम्वर्ति, सराहना या जुड़ाव जताने का ज़रिया दिया है। समय के साथ अब यह केवल एक बटन नहीं रहा, बल्कि इसके ज़रिए अनेक संभावनाएं साकार हुई हैं। इससे किसी पोस्ट को लोकप्रियता मापी जा सकती है। बाज़ार के ब्रांड और पेज अपनी पहुंच का इसी से विश्लेषण करते हैं। मगर हाल के वर्षों में लाइक बटन की भूमिका पर सवाल भी उठने लगे हैं। कई शोध बताते हैं कि लाइक की संख्या पर अत्यधिक ध्यान देने की लत उपयोगकर्ताओं के आत्मसम्मान तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। उपयोगकर्ता लाइक पाने की होड़ में कृत्रिम और आकर्षक कंटेंट पोस्ट करने की उतावली करते हैं, जिससे प्रामाणिकता में कमी आती है। एल्गोरिदम अधिक लाइक वाले पोस्ट को बढ़ावा देता है, जिससे कम आकर्षक पोस्ट दब जाते हैं। एल्गोरिदम यह तय करते हैं कि कौन-सा कंटेंट फीस में ऊपर दिखाया जाए। इन चुनौतियों के चलते फ़ेसबुक ने परीक्षण के रूप में कुछ देशों में लाइक की गिनती छिपाने का विकल्प शुरू किया है। इसका उद्देश्य है कि उपयोगकर्ता कंटेंट की गुणवत्ता पर ध्यान दें, न कि उसकी लोकप्रियता पर। पहले केवल लाइक बटन था, अब लव, हा हा, दुखद, क्रोध जैसी इमोजी प्रतिक्रियाएं भी हैं। जानकार कहते हैं कि भविष्य में यह प्रतिक्रियाएं और विविध हो सकती हैं। ऐसी परिस्थिति में फ़ेसबुक का लाइक बटन एक संक्रमण काल से गुज़र रहा है। बहुतों को लगता है कि लाइक बटन का स्वरूप आगे चलकर बदलेगा, मगर इसकी उपयोगिता किसी न किसी रूप में डिजिटल बातचीत में ज़रूर बनी रहेगी।

कहा जाता है कि फ़ेसबुक पर ‘लाइक’ बटन के कई सामाजिक और मानसिक प्रभाव हो सकते हैं, जो कभी-कभी नुकसानदायक भी साबित हो सकते हैं। लोग ‘लाइक्स’ को एक तरह के रिवार्ड (इनाम) की तरह देखने लगते हैं। जब ज्यादा लाइक्स मिलते हैं तो अच्छा लगता है, जिसे चिकित्सा विज्ञान में डोपामाइन इफ़ेक्ट कहा जाता है। डोपामाइन एक प्रकार का रसायन है जो दिमाग में तब रिलीज होता है, जब मस्तिक इनाम जैसा कुछ पाने की उम्मीद कर रहा होता है। लेकिन जब लाइक कम मिलते हैं तो निराशा होती है। अपनी किसी पोस्ट पर कम लाइक्स मिलने से व्यक्ति खुद को कम मूल्यवान महसूस कर सकता है। इसके साथ ही उपयोगकर्ता में अपनी दूसरों से तुलना की भावना जाग्रत हो उठती है। लोग दूसरों की पोस्ट और लाइक्स की संख्या से अपनी तुलना करने लगते हैं, जिससे ईर्ष्या और हीन भावना पैदा होती है जो अवसाद की हालत में ले जा सकती है। विशेषज्ञ कहते हैं कि लाइक्स अक्सर किसी पोस्ट की ‘गुणवत्ता’ नहीं बल्कि लोकप्रियता या टाइमिंग को दर्शाते हैं। इससे कंटेंट की असली वैल्यू को समझना मुश्किल हो जाता है। इनसे फ़ेसबुक पर फेक और सतही व्यवहार को बढ़ावा मिलता है। लोग लाइक्स पाने के लिए झूठी या अतिशयोक्तिपूर्ण बातें पोस्ट करते हैं, जिससे सोशल मीडिया पर झूठ और फरेब बढ़ता है। अपनी पोस्ट को बार-बार चेक करना कि उसे कितने लाइक्स मिले हैं, एक आदत सी बन सकती है।

लाइक बटन के आविष्कार पर ‘लाइक’ का हाथ था, और उन्होंने इसे जिस तरह से डिज़ाइन किया, वह अंततः एक इच्छा के द्वार किए गए सभी कार्यों का एक छोटा सा हिस्सा था। मूल लाइक बटन को शाब्द तारीफ़ों को सुविधाजनक बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया था जो लोगों को अधिक ऑनलाइन सामग्री बनाने के लिए प्रेरित कर सके। फिर सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को उस सामग्री के लिए विभिन्न भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को दर्ज करने की इच्छा को पहचानने के लिए बदल दिया गया जिससे पता चल सके कि क्या चीजें उपयोगकर्ता का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। लाइक का क्लिक लोगों की पसंद करने के व्यवहार के अलावा उनकी पहचान को स्थापित करने, समूह में स्थिति को मजबूत करने, बातचीत को नियंत्रित करने, दूसरों में रूचि दिखाने, सामाजिक संबंध बनाए रखने, संसदीय राय को बढ़ावा देने तथा और भी बहुत कुछ

यह बाज़ार की व्यवस्था है। इससे उन्हें फीडबैक मिलता है कि कितने लोगों को पोस्ट पसंद आई, और वे इससे किसी उत्पाद या मत का अंदाज़ा लगा सकते हैं। इससे आभासी दुनिया में एंगेजमेंट या जुड़ाव भी बढ़ता है। ज्यादा लाइक का मतलब है कि पोस्ट अधिक लोगों तक पहुंच रही है। इससे यह समझने में भी मदद मिलती है कि किस टाइप का कंटेंट ज्यादा पसंद किया जा रहा है। इसे ऑडियंस एनालिटिक्स कहते हैं।

आँडियंस एनालिटिक्स कहते हैं।
बनाएंगे जो डिजिटल बातचीत के अंत को थामे रखने के लिए होगा।
यह जानने की जिज्ञासा भी बनी हुई है कि क्या लाइक बटन के प्रत्येक फ़ंक्शन का रास्ता भविष्य में अलग-अलग होगा? विशेषज्ञों की राय है कि किसी भी तरह से हो, जो भी आगे आएगा वह वर्तमान सुविधा को एक झटके में बदलने के बजाय धीरे-धीरे खुद को स्थापित करने को संभावना के साथ आएगा।

यह स्पष्ट है कि लाइक बटन से राय जाहिर करना आसान होता है। उससे बिना कमेंट किए किसी पोस्ट के प्रति अपनी सहमति या पसंद जाहिर की जा सकती है। वह समय की बचत भी करता है क्योंकि सिर्फ एक क्लिक में अपनी प्रतिक्रिया दी जा सकती है। दूसरी तरफ इससेइंटरनेट पर्सनलाइजेशन भी होता है। जो चीजें हम लाइक करते हैं, फ़ेसबुक उसे टैक करता है तथा उसी से जुड़ी सामग्री और विज्ञापन उपयोगकर्ताओं को दिखाना शुरू कर देता है। मगर इससे उपयोगकर्ता को नहीं, कंटेंट क्रिएटर और पेज ओनर को फायदा होता है। यह बाज़ार की व्यवस्था है। इससे उन्हें फीडबैक मिलता है कि कितने लोगों को पोस्ट पसंद आई, और वे इससे किसी उत्पाद या मत का अंदाज़ा लगा सकते हैं। इससे आभासी दुनिया में एंगेजमेंट या जुड़ाव भी बढ़ता है। ज्यादा लाइक का मतलब है कि पोस्ट अधिक लोगों तक पहुंच रही है। इससे यह समझने में भी मदद मिलती है कि किस टाइप का कंटेंट ज्यादा पसंद किया जा रहा है। इसे ऑडियंस एनालिटिक्स कहते हैं। इससे यूजर बिहेवियर (उपयोगकर्ता के व्यवहार) को ट्रैक करना आसान होता है कि कौन क्या पसंद कर रहा है। इससे यूजर प्रोफाइल बेहतर बनाई जा सकती है जिससे सटीक विज्ञापन टारगेटिंग का जा सकती है जो डिजिटल दुनिया का मूल में कारोबार है। इसी से उपयोगकर्ता की पसंद के हिसाब से विज्ञापन दिखाए जाते हैं। इससे क्या दिखाया जाए की ‘कंटेंट सिफारिश प्रणाली’ में सुधार लाया जाता है। अर्थात डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म उसी प्रकार का कंटेंट सुझाता है जो लोग देखना चाहते हैं।

अब दबाव बढ़ रहा है कि एल्गोरिदम को केवल लाइक के बजाय साज़ा करने, टिप्पणी करने और देखने की अवधि जैसे मापदंडों को भी महत्त्व देना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो वह यूजर-केंद्रित अनुभव होगा और भविष्य में यूजर को यह चुनने का आज़ादी मिल सकती है कि वह दूसरों के लाइक देखना चाहता है या नहीं। इस तरफ बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है कि लाइक पेट्रन से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस लोगों की रूचियों और व्यवहार को जब ट्रैक करते हैं, तब उनकी निजता प्रभावित हो सकती है। आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से डिजिटल मीडिया संचालक यह भी समझने की कोशिश करेंगे कि किसी प्रतिक्रिया के पीछे भावनात्मक शक्ति क्या है।

अब मुश्किल यह भी है कि आभासी सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के वास्तविक जीवन के इतने करीब आ गया है कि लोग ऑफ़लाइन बातचीत से दूर होते जा रहे हैं। लगता है कि यह धीरे-धीरे लोगों की वास्तविक जीवन जैसी की क्षमता को नष्ट कर रहा है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक हो है कि क्या लाइक बटन चालू रहेगा तथा अधिक विकसित हो कर फैलेगा? बहुतों को लगता है कि नई आदतें लाइक को अप्रचलित बना सकती हैं। और दूसरे नियामक एजेंसियां और नीति निर्माता डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर अंकुश लगा सकते हैं जिससे लाइक को बाज़ार के लिए उपयोगिता बाधित हो। मगर दूसरी तरफ, कानूनी और नियामक हस्तक्षेप लाइक बटन को नई ताकत भी दे सकते हैं। लाइक बटन शुन्य में मौजूद नहीं है। यदि ऐसे सक्रिय कानून बनते हैं जो लोगों को किसी संदेश को साज़ा करने से पहले थोड़ा रुककर उसके संभावित परिणामों पर विचार करने की व्यवस्था करते हों, तो प्रक्रिया मंंक टकराव के हालात रोके जा सकते हैं और लोग प्रतिक्रिया दर्ज करने के लिए सरल लाइक बटन का उपयोग कर सकते हैं। किसी डेटा को पसंद करना एल्गोरिदम में अधिक महत्व देने वाले कारक के रूप में नयी पहचान प्राप्त कर सकता है। विभिन्न अध्ययनों में लाइक बटन की जटिलताओं और संभावनाओं का पता चला है तो साथ ही यह भी पाया गया है कि यह बटन एक साथ इतनी सारी सुविधाएं प्रदान करता है कि अब वह सोशल मीडिया पर एक ज़रूरी उपकरण बन चुका है। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि फ़ेसबुक का लाइक बटन कितना लाइक किया जाता है।

—**अतिथि संपादक, राजेन्द्र बोड़ा (वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)**



पंडित अनिल शर्मा

शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।
आज सर्वाथ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:53 तक, रवियोग और कुमार योग रात्रि 9:53 तक बने रहेंगे।
उपयोग रात्रि 9:53 से सूर्योदय तक है।
आज कल्की जयन्ती, त्रियाल छठ, वर्षा षष्ठी है।
श्रेष्ठ चौघड़िया:
लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:13 तक, शुभ १०:53 से 12:33 तक, चर 3:53 से 5:33 तक, लाभ 5:33 से सूर्यास्त तक।
राहुकाल:
12:00 से 1:3० तक।
सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 7:12

राशिफल

बुधवार 30 जुलाई, 2025

सावन मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2०82, हस्त नक्षत्र रात्रि 9:53 तक, सिद्ध योग रात्रि 3:4० तक, कोलव करणदिन 1:44 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रहस्थिति: सूर्य-कर्क चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरु-मिथुन, शक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में। आज सर्वाथ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:53 तक, रवियोग और कुमार योग रात्रि 9:53 तक बने रहेंगे। उपयोग रात्रि 9:53 से सूर्योदय तक है। आज कल्की जयन्ती, त्रियाल छठ, वर्षा षष्ठी है। **श्रेष्ठ चौघड़िया:** लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:13 तक, शुभ १०:53 से 12:33 तक, चर 3:53 से 5:33 तक, लाभ 5:33 से सूर्यास्त तक। **राहुकाल:** 12:00 से 1:3० तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 7:12

मे़ष
व्यक्तित पेशानियां दूर होने लगेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों के बहाने मिल सकती हैं। अटक हुए कार्य बने लगेगे। स्वास्थ्य में जोर होगा होगा।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित ख़ोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बने लगेगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित ख़ोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बने लगेगे।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बन्ते कार्य विगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मीन
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवर्जनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

खादी से हस्तशिल्प तक: स्वदेशी आंदोलन की नई परिभाषा



अविनाश जोशी

स्वदेशी सोच आधुनिक भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसका मतलब है अपनी देशीय उत्पादों को प्राथमिकता देना, उन्हें समर्थन देना और स्वदेशी उत्पादों की उपयोगिता बढ़ाना। स्वदेशी सोच विशेष रूप से अर्थव्यवस्था, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। यह देश की आत्मनिर्भरता और समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण अभियान है।

भारतीय वस्तुओं के प्रति अनुराग एवम विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार यही तो हमारा मुख्य धर्म होना चाहिए। आज की पीढ़ी को यह सब बताना होगा हमें स्वदेशी उद्योगों, शिक्षा, साहित्य, कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देना होगा। फैशन ही सही लेकिन स्वदेशी मोह हमारा मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। खादी एवम सूती कपड़े का प्रचलन स्वदेशी उत्पाद के प्रति जागरूकता का ज्वलंत उदाहरण है। स्थानीय बाज़ार में स्वदेशी ब्रांड्स के उत्पादों और सेवाओं को समर्थन देना और बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन सभी पहलुओं के साथ, स्वदेशी ब्रांड्स को उत्पादों और सेवाओं के लिए अधिक विश्वसनीय, उपयुक्त और रचनात्मक समाधान प्रदान करने के लिए प्रयास करना होगा।

स्वदेशी सोच देश की अर्थव्यवस्था

में महत्वपूर्ण योगदान करती है क्योंकि यह उत्पादन, रोजगार, और आय को स्थानीय स्तर पर बढ़ाती है। स्वदेशी उत्पादन और सेवाओं का समर्थन करने से देश में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र का विकास होता है, जिससे सार्वजनिक उत्पादन और सेवाओं की गुणवत्ता भी बढ़ती है। इसके अलावा, स्वदेशी सोच भ्रष्टाचार को कम करने में भी मदद कर सकती है, क्योंकि स्थानीय उत्पादन और सेवाओं को समर्थन करने से विभाजन और अन्य संघटनात्मक असंतोष कम होता है।

स्वदेशी हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का मूल-मंत्र था, कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं। औसतीवीं सदी में दादा भाई नौरोजी को ‘ड्रेन थ्योरैट’ हो या रमेशचंद्र दत्त की लिखी ‘भारत का आर्थिक इतिहास’ या सखाराम गणेश देउस्कर लिखित ‘देशेर कथा’ जैसी पुस्तकें हो, सभी के केंद्र में औपनिवेशिक शासन-ंत्र द्वारा देसी संसाधनों का दोहन व देशी धन-संपदा के विलायत में पलायन को रोकना मुख्य सरोकार थे। आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक माने जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने लेखन से स्वदेशी को अलख जगाई। 1905 का बंग-भंग विरोधी आंदोलन भी स्वदेशी की भावना से ओग्रेपित था जब बंगाल में विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई और उनके बहिष्कार पर बल दिया गया। इस स्वदेशी भाव को राष्ट्रीय स्तर पर बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया महात्मा गांधी ने 192० में असहयोग आंदोलन आरंभ करके। उन्होंने इसे न केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा उनके अग्निदाह तक सीमित रखा, बल्कि उद्योग-शिल्प, भाषा, शिक्षा, वेश-भूषा आदि सब पर स्वदेशी का रंग चस्पा कर दिया।

स्वदेशी ब्रांड्स के सामने अंतरराष्ट्रीय

स्कूलों की मरम्मत के लिए 1०2.4 लाख रुपये मंजूर हलैना का संस्कृत स्कूल जर्जर हालत में

हलैना (निस)। संस्कृत शिक्षा विभाग के अधीनस्थ कस्बा हलैना में संचालित राजकीय संस्कृत उच्च प्राथमिक स्कूल के भवन की हालत दयनीय होने से विद्यार्थी व गुरुजन बेहद परेशान हैं, ये स्कूल साल 199६ में खुला और साल 2००6 में क्रमोन्नत हुआ और साल 2००7 में करीब 5० लाख की लागत से भवन का निर्माण हुआ। ये भवन गुरु 18 साल के अन्दर ही जर्जर होने लग गया, भवन के कमरों की दीवारों में दरारे पड़ गई और हलैनी बरसात होने पर छत से पानी टपकती है तथा दीवारों से सीमेन्ट व बजरी-कंकड गिरते हैं। भवन के अभाव में बच्चे

और विद्यार्थियों में इन विद्यालयों के प्रति विश्वास लगातार बढ़ रहा है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच दोनों में समांतर रूप से सुधार हो रहा है। यही वजह है कि पिछले सत्र की तुलना में वर्तमान सत्र में करीब दोगुना नामांकन दर्ज किया गया है।

प्राथमिक शिक्षा को नई दिशा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-202० में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता और मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। इसी दिशा में शिक्षा विभाग द्वारा ठोस कदम उठाए जा रहे हैं जिससे न केवल शिक्षा की बुनियाद मजबूत हो रही है बल्कि विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही सीखने की सी सहस्र विवेकसित हो रही है। प्रदेश के 4०2 पीएमसी विद्यालयों में पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं की शुरुआत की गई है जिससे तीन से छह वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को सुनियोजित प्रारंभिक शिक्षा मिल रही है। साथ ही, स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल सीबीएसई अंतर्गो माध्यम विद्यालयों में पहली बार प्राथमिक कक्षाएं प्रारंभ कर इन विद्यालयों को पूर्ण शैक्षणिक संस्थान की रूप में विकसित किया जा रहा है। कक्षा 1 से 5 तक के 1.15 लाख शिक्षकों को फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरीसी (एफएएलएन) आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा ह, ताकि वे बच्चों को बेहतर भाषा और गणितीय कौशल प्रदान कर सकें। इसके अतिरिक्त, 45 हजार विद्यालयों में

विकास को समर्थन देते हैं। ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय कला, शिल्प, और संस्कृति को प्रमोट करते हैं, जिससे उनकी अर्थात्मकता बढ़ती है। ये हाट और हस्तशिल्प क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, विशेष रूप से महिलाओं और गरीब वर्ग के लोगों के लिए। ये ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय उत्पादकों के उत्पादों को बाजार में प्रसारित करने का माध्यम होते हैं। ये हाट और हस्तशिल्प स्थानीय शिल्पकला, बुनाई, और अन्य परंपरागत कलाओं को बचाव और संरक्षण का माध्यम भी बनाते हैं। ये स्थानीय समुदाय के आर्थिक विकास में सहायक होते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों का उत्थान होता है। इस प्रकार, ग्रामीण हाट और हस्तशिल्प स्थानीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर स्वदेशी उत्पादों के प्रसार और समर्थन में मदद करते हैं।

स्वदेशी सोच को केवल एक दिखावा मानना गलत हो सकता है। हालांकि, कुछ लोग इसे सिर्फ आधुनिक एवं कुछ अलग दिख सके इसका माध्यम मानते हैं, लेकिन असल में, स्वदेश सोच एक विचारशीलता और सामाजिक परिवर्तन की दिशा है। यह उत्पादन, वित्तीय स्वावलंबन, और स्थानीय समुदायों के विकास को समर्थन करता है। इसका उदाहरण उत्पादों की स्थानीय खरीदारी, स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करना और विदेशी निवेशों के साथ समर्थन का एकीकरण हो सकता है। इसलिए, स्वदेश सोच वास्तव में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की अवधारणा है, जो समृद्धि और समाज की उन्नति की दिशा में मदद कर सकती है।

स्वदेशी सोच में खादी का महत्वपूर्ण योगदान है। खादी एक परंपरागत भारतीय वस्त्र है जो देश की स्वतंत्रता संग्राम के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खादी का

—**अविनाश जोशी, स्वतन्त्र पत्रकार एवम लेखक**

खुले आसमान के नीचे और मैदान में बैठ कर पढ़ने को मजबूर है। संस्था प्रधान भागचन्द मीणा की सूचना पर सभांगीय संस्कृत शिक्षा अधिकारी सतीश बागौरिया ने 29 जुलाई को कस्बा हलैना के सरकारी संस्कृत स्कूल की हालत देखी और जर्जर भवन के अन्दर प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी। साथ ही प्रशासन,मसमा,संस्कृत शिक्षा विभाग के आलापिकारियों स्कूल की हालत से अवगत कर दिया। संस्कृत स्कूल के संस्था प्रधान भागचन्द मीणा ने बताया कि 18 साल के अन्दर ही भवन की हालत जर्जर होना चिन्ता का विषय है,जिसकी सूचना विभाग को भेज दी। स्कूल में

कक्षा एक से आठवी तक 7० विद्यार्थी पढ़ते हैं और संस्था प्रधान सहित सात शिक्षक-शिक्षिका लगे हुए हैं। भवन का अभाव होने से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो गई। सभांगीय संस्कृत शिक्षा अधिकारी सतीश बागौरिया ने बताया कि कस्बा हलैना के संस्कृत स्कूल का निरीक्षण किया,जिसकी हालत बेहद खराब है,बच्चे खुले मैदान में पढ़ रहे हैं,जिन्हे बरसात होने पर बचाव नहीं मिले आता। स्कूल के जर्जर भवन के अन्दर प्रवेश पर रोक लगा कर संस्था प्रधान से बोल दिया

के प्रयोग से विद्यार्थियों के परिणाम एवं समठा विकास का डेटा प्राप्त किया जा सकता है। इसके साथ ही, शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से विद्यालयों, शिक्षकों और विद्यार्थियों का रियल टाइम डेटा उपलब्ध हो रहा है जिससे पारदर्शित और प्रभावशीलता दोनों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। यह पोर्टल न केवल प्रशासनिक कार्यों को सरल बना रहा है बल्कि नीति निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

बालिका शिक्षा की दिशा में प्रयासरत हैं। शहरी क्षेत्रों से लेकर दूरस्थ ग्रामीण अंचलों तक बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए बहुआयामी योजनाएं लागू की जा रही हैं। प्रदेश में 342 कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है, जो विशेष रूप से वंचित और पिछड़े वर्ग की बालिकाओं को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

डॉ.अमृता कटारा, सहायक जनसंपर्क अधिकारी, डीआईपीआर,जयपुर, राजस्थान।